

>

Title: Discussion regarding Situation arising out of widespread corruption in the country, raised by Dr. Murli Manohar Joshi on the 24th August, 2011 (Discussion concluded).

MADAM SPEAKER: Item No. 13.

***श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल):** आज देश में भ्रष्टाचार एक आदत बन गया है। भ्रष्टाचार की परिभाषा भी इतना विस्तृत रूप ले चुकी है कि उसको परिभाषित करना भी वर्तमान में आसान नहीं है। लेकिन भ्रष्टाचार का संबंध हर छोटे-बड़े स्तर पर इतना व्यापक हो गया है कि रावण की भांति इसके भी कई मुख हो गए हैं। ऐसा नहीं कि भ्रष्टाचार सिर्फ भारत में ही है, यह तो एक वैश्विक घटना है और सर्वव्यापी है। समय के साथ-साथ भ्रष्टाचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है जो कि चिन्ता का विषय है और आज हमारे समाज में यह बड़े पैमाने पर है।

भारत में भ्रष्टाचार, नौकरशाही, राजनीति और अपराधियों के बीच गठजोड़ का परिणाम है। भारत में आज भ्रष्टाचार के उन्मूल की बात, उसे जड़ से खत्म करने की बात, भ्रष्टाचार पर अंकुश की बात हर तरफ हो रही है। एक नई विचारधारा की शुरुआत देश में हो गई है जो कि आने वाले भविष्य के लिए एक अच्छा संकेत है। परन्तु जागरूकता का यह विचार कहीं विचार ही बनकर न रह जाए, उसके लिए जरूरी है, धरातल पर आकर एक ऐसे कानून का निर्माण करने की जिससे कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगे। एक ऐसा कड़ा कानून देश में आए कि व्यक्ति भ्रष्टाचार तो दूर उसके विषय में भी सोचने से पहले सोचे। एक समय में किसी को गलत साबित करने के लिए रिश्त का भुगतान किया जाता था। परन्तु अब तो रिश्त सही समय पर सही चीजें प्राप्त करने के लिए सुविधा शुल्क हो गया है।

विश्व के 106 देशों की सूची में जो कि भ्रष्ट हैं उसमें भारत का 54वां नम्बर है। भारत में भ्रष्टाचार के पहिए नहीं पंख हैं। लोग भ्रष्टाचार के लिए नए-नए तरीके का अविष्कार करते रहते हैं।

भ्रष्टाचार के कारण कई और जटिल हैं जिन पर गौर करना अत्यंत आवश्यक है। मुनाफा कमाने के इरादे से लोगों द्वारा अर्थव्यवस्था में बनाई गई कृत्रिम कभी भी भ्रष्टाचार के बढ़ावे में सहायक है।

नैतिक गुणों में परिवर्तन के कारण भ्रष्टाचार को बल मिला है। आज लोग सेवा, त्याग, ईमानदारी और आत्मसंतोष जैसी विरासत में मिली सभ्यता, संस्कृति को भूल गए हैं। जिनके झूस से ही भ्रष्टाचार बढ़ा है। पुराने आदर्श, सात्विक गुणों के तोप से ही समाज में इस राक्षस ने अपनी जड़े फैलाई हैं।

एक विशाल जनसंख्या और व्यापक निरक्षरता, गरीबी ने भ्रष्टाचार के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक उच्च मुद्रास्फीति की अर्थव्यवस्था में कर्मचारियों के कम वेतन ने इस राक्षस को उत्साही किया।

भ्रष्टाचार एक ऐसा रोग है कि समय के साथ-साथ बढ़ा परन्तु अब समाज में आई जागरूकता ने इसे खत्म करने के लिए जो पहल शुरू की है वह सहायनीय है। पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस बुराई को समाप्त करने में समय लगेगा। यदि कोई है कि यह एक दिन, एक हफ्ते या एक महीने में खत्म हो जाएगा, तो मैं कहना चाहता हूँ ऐसा संभव नहीं है। भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए राष्ट्र भक्ति और आत्मिक शक्ति चाहिए।

भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए आत्मसंतोष जरूरी है। जिस प्रकार शबरी आत्मसंतोष के साथ भगवान राम के आने का इंतजार करती रही उसे आशा थी कि एक दिन प्रभु अवश्य आएंगे और उसकी प्रार्थना भगवान ने स्वीकार की और उसकी कुटिया पर जा उसे दर्शन दे कृतार्थ किया। इसीप्रकार बालक पृह्लाद ने सैंकड़ों दुखों को झेलते हुए भगवान के दर्शन प्राप्त किए और अत्याचारी द्विण्याकश्यप का अंत हुआ। इसीप्रकार आज इस बुराई के खात्मे के लिए आध्यात्म शक्ति एवं चेतना आवश्यक है। केवल एक व्यक्ति से नहीं अपितु समस्त समाज को इस कालिया नाग रूपी भ्रष्टाचार का फन कुचलने के लिए मिलकर आपसी सद्भाव से कार्य करना होगा तब हम जाकर इस भ्रष्टाचार रूपी नाग का फन कुचल पाएंगे।

जिस प्रकार शरीर में रोग लगने पर हम उसे उपचार देते हैं, उसी प्रकार भ्रष्टाचार रूपी इस कैंसर को खत्म करने के लिए हमें प्रयास करने होंगे। हमें आत्म संकल्प से इस भ्रष्टाचार रूपी कैंसर का उपचार करना होगा, तब जाकर टढ़ संकल्प से इसका अंत होगा। लेकिन यह एक सामयिक प्रक्रिया है।

भ्रष्टाचार से सबसे ज्यादा प्रभावित अविकसित और विकासशील देश हैं। एक कच्चे लाभ के कारण लोग भ्रष्टाचार की गर्त में धंसते जाते हैं। भ्रष्टाचार के बारे में कुछ मिथक भी प्रचलित हैं जिनको तोड़ना होगा जैसे भ्रष्टाचार जीवन का एक तरीका है और इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। जल्दी अमीर बनना है तो भ्रष्टाचार करो जैसी भावनाओं को समाप्त करना होगा। इन सब बातों से लड़ने के लिए एक रणनीति बनानी होगी और उस पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा तब जाकर भ्रष्टाचार की जड़े हिलेंगी।

निचले स्तर के प्रशासनिक कर्मचारियों से लेकर उच्चतम स्तर के अधिकारियों के लिए श्रेणियां वर्गीकृत की जानी चाहिए तथा अलग-अलग स्तर के कर्मचारियों के लिए अलग-अलग कानून बनाने चाहिए, फिर उसी के अनुरूप भ्रष्टाचार करने पर सजा का प्रावधान होना चाहिए। साथ ही रिश्त लेने वाला ही नहीं रिश्त देने वाला भी सजा के दायरे में आना चाहिए, उसे भी सजा मिलनी चाहिए क्योंकि जब रिश्त देने वाले को भी सजा का प्रावधान होगा तो लोग अपने आप रिश्त देनी बंद करेंगे तथा यह बुराई समाप्त होगी। लोगों का सहयोग ही सफलतापूर्वक भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकता है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक पारदर्शी जवाबदेह एकरूप प्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक है, जो जनभावनाओं व जनआकांक्षाओं के अनुरूप बने। अच्छी नौकरशाही और अच्छा प्रशासन किसी भी देश के विकास की रीढ़ की हड्डी होती है। जब तक यह हड्डी ही मजबूत नहीं होगी तब तक भ्रष्टाचार रूपी दानव बढ़ेगा। इसलिए सबसे पहले देश की रीढ़ की हड्डी अर्थात् सिस्टम को मजबूत व पारदर्शी बनाना अत्यंत आवश्यक है।

मैं विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले उत्तराखंड राज्य का प्रतिनिधित्व करता हूँ जहां आए दिन भूस्खलन, बाढ़, बादलफटने जैसे घटनाओं के कारण रास्ते बंद हो जाते हैं। वैकल्पिक मार्गों की व्यवस्था न होने के कारण आम आदमी को दैनिक आवश्यकताओं की वस्तु भी दूभर हो जाती है। वर्तमान राज्य सरकार ने तो वहां भ्रष्टाचार का नया कीर्तिमान ही स्थापित कर दिया है। भ्रष्टाचार से त्रस्त होकर वहां के सुप्रसिद्ध लोकगायक श्री नरेन्द्र सिंह नेगी ने तो गढ़वाली भाषा के एक पूरा

गीत ही भ्रष्टाचार पर बना दिया जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

कमीशन की मीट भात, रिश्त को रेलो।

बसकर भण्डि ना सपोड़ अब कथगा खैल्यो।

नयु-नयु राज उत्तराखंड आस मा छन लोग-लोग रे।

बियाणा छन डाम यख, लेन्दा को तेरे जोग।

कुम्भ नहयेगे भुलू, अब आपना नहयेल्यो रे।

नियुक्त्युं की रसमलाई, टंसफरुको हलुवा-हलुवा।

मालदार विभागुमा तेरा चेलों को जलुवा।

भ्रष्टाचार एक प्रमुख मुद्दा है। इस संदर्भ में उत्तराखंड के जन कवि श्री नरेन्द्र सिंह नेगी ने उत्तराखंड सरकार पर एक गीत लिखा है कि कमीशन का मीट और भात अर्थात् चावल रिश्त का रेलो है बस अब ज्यादा मत खा कितना खाओगे, कितना पचाओगे। ज्यादा खाने से दुखी हो जाओगे। नया-नया उत्तराखंड राज्य है। लोग आशा में हैं कि विकास होगा, डामो में खाया, कुम्भ में भी खाया, आपदा में भी खाया, टंसफार्मरों व नियुक्तियों में भी खा रहे हो।

यह तो बात हुई उत्तराखंड राज्य की, जहां एक कवि ने भी वहां की जनता के दर्द को इस प्रकार खूबसूरत शब्दों में उकेरा है।

मेरे अनुसार भ्रष्टाचार के खात्मे के लिए अधिक से अधिक फास्ट ट्रैक कोर्टों का गठन किया जाना चाहिए जिससे न्याय में तेजी आए। जनता के लिए सस्ते न्याय की व्यवस्था हो। स्थानीय निकायों, लोकपालों, लोकअदालतों और केन्द्रीय सतर्कता आयोग को और मजबूत किया जाना चाहिए।

एक नया मौलिक अधिकार होना चाहिए जो नागरिकों को सशक्त बनाए जो जानकारी वह चाहते हैं राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा विन्ताओं को छोड़कर उन्हें उपलब्ध करवानी चाहिए। जोकि भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कड़े हथियार के रूप में प्रयोग लाया जा सकता है।

भ्रष्टाचार एक असभ्य समस्या है। यह मधुमेह की तरह है, जिसे केवल नियंत्रित किया जा सकता है, समाप्त नहीं। ऐसी कुछ लोगों की राय है कि सभी स्तर से भ्रष्टाचार का सफाया संभव नहीं होगा। परन्तु मेरा मानना है कि अध्यात्मिक शक्ति द्वारा आत्म संतुष्टि के गुण का विकास कर इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। यह कैसर समाप्त किया जा सकता है। जरूरी है ईमानदारी से, सदभावना से, लगन से एकनिष्ठ होकर प्रयास करने की। अपने स्वार्थों को त्याग समाज में अनैतिकता, अराजकता से लड़ने की। राष्ट्रभक्ति और आपसी सौहार्द की भावना अपने अंदर बलवती करने की सभी को एक समान समझने की। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, विरासत में मिले मूल्यों को जीवन में धारण करने से इस अर्थप्रधान युग में संत कबीर दास से शिक्षा लेते हुए उसे चरितार्थ करने की।

साई इतना दीजिए जा में कुटुम्ब समाय।

में भी भूखा न रहूं, साधु भी भूखा न जाए।।

हमें हमारे समाज में फन फैला रहे इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊंचा उठाना। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने को इस भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। यही नहीं शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए। जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य ज्ञान को आवश्यक सुविधाएं भी सुलभ करनी होंगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए जनता को और अधिक जागरूक बनना होगा और शुरुआत खुद से करनी होगी, बात-बात में सरकार को कोसने से काम नहीं चलेगा, जब हम खुद रिश्त देने को तैयार रहेंगे तो सरकार क्या कर लेगी? हमें रिश्त देना बन्द करना होगा, चुनाव के समय अधिक सावधानी बरतनी होगी और समझदारी से काम लेना होगा। हमें हर स्तर पर गलत बात का विरोध करना होगा। जब सिविल सोसायटी की जागरूकता से जेसिका लाल और रुचिका जैसी लड़कियों को न्याय मिल सकता है, तो भ्रष्टाचार को अपने देश की शासन-प्रणाली से उखाड़ फेंकना कौन सी बड़ी बात है। हमारे पास मतदान का अधिकार और सूचना के अधिकार जैसे कानून के रूप में हथियार पहले से ही हैं जरूरत है तो उस हिम्मत की जिससे हम भ्रष्टाचार रूपी दानव से लड़ सके।

***श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर):** भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए देश भर में लोग आंदोलित हो रहे हैं। आदरणीय अन्ना जी द्वारा पिछले 9 दिनों से अनशन भी इस मुद्दे को लेकर है और हम आज नियम 193 के अंतर्गत लोक सभा में देश में बढ़ते भ्रष्टाचार को लेकर विन्ता व्यक्त कर रहे हैं। लोक सभा में चल रही भ्रष्टाचार पर चर्चा में देश में भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए क्या करना चाहिए, इस पर चर्चा होने के बजाए भ्रष्टाचार को छिपाने का सरकार द्वारा प्रयास हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में यूपीए के शासन काल में बड़े-बड़े भ्रष्टाचार उजागर हुए हैं। 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, आदर्श घोटाला, गोदावरी बेसीन गैस घोटाला, एनआरएचएम घोटाला, राशन घोटाला उजागर हुआ। देश के नियंत्रक और महालेखाकार (कैंग) ने तथा उच्चतम न्यायालयों के निर्देशों के बाद ये सभी घोटाले उजागर हुए, लेकिन सरकार ने कार्रवाई करने में विलम्ब से सरकार का भ्रष्टाचार के विरोध में कार्रवाई करने की इच्छाशक्ति दिखाई नहीं दे रही है।

मैंने स्वयं देश के कोयला तथा अन्य खनिज सामग्री के मुफ्त तथा अंधाधुंध दोहन का मामला उठाकर इस पर सरकार से कार्रवाई का आग्रह किया लेकिन इसका संज्ञान ही नहीं लिया जा रहा है। यह लिपापोती किसके लिए और क्यों की जा रही, यह सवाल खड़ा होता है। देश के प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है। इसका सामना सभी को करना पड़ता है। स्थानीय स्तर पर 100, 200, 1000 रूपए की घूस लेने वाले चतुर्थ, तृतीय स्तर के कर्मचारी को भ्रष्टाचार प्रतिबंधक विभाग और पुलिस घेरे में ले सकती है। लेकिन 1 लाख 76 हजार करोड़ रूपए के 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाले में शामिल लोग इससे अछुते रहते हैं। सारा देश इस दोहरेपन को देख रहा है। कॉमनवेलथ गेम पर सरकार ने बिठाई शृंगलू कमेटी ने दिल्ली की मुख्यमंत्री को आरोपित करने और बाद में कैंग ने भी इसकी पुष्टि करने के बाद भी वह आज भी अपने पद पर बनी रह सकती है। कर्नाटक में लोकायुक्त की रिपोर्ट के बाद अगर येदीयुरप्पा को हटाया जाता है तो फिर दिल्ली की मुख्यमंत्री पर यही तरीका अपनाने का विरोध क्यों होता है। उनके समर्थन में सरकार पक्ष से दलीले दी जाती है कि उनका भ्रष्टाचार उतना बड़ा नहीं है। हम स्थानीय स्तर के कर्मचारी को नहीं बखशते तो इन बड़े लोगों को बखशने का क्या कारण है। इससे जनता में गलत संदेश जा रहा है। भ्रष्टाचार की गंगा ऊपर से नहीं जा रही है। अब जनता का यह मानना यूपीए सरकार द्वारा सही ठहराया जा रहा है। अगर हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़नी है तो हमें बगैर पक्षपात के तथा पूर्वाग्रह से दूर रहकर भ्रष्टाचारी कोई भी हो उसे दंडित करना चाहिए। मगर खेद से कहना पड़ता है कि यह होता नहीं दिख रहा, इससे जनता में आक्रोश पनप रहा है। आदरणीय अन्ना जी ने भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाया तो जनता उनके पीछे खड़ी हो गई, इसका कारण भी आम जनता के मन में जो भ्रष्टाचार के विरोध में टीस पनपी है उसे दिया जाना चाहिए वह भुक्तभोगी है। आज भी राशन कार्ड, गैस, फियोसीन, तहसीलों में प्रमाण पत्र, जन्म-मरण प्रमाणपत्र बगैर घूस दिए मिलना असंभव सा हो गया। जनता का यह असंतोष आज जनआक्रोश के रूप में परिवर्तित हो गया है। इस पर हमें ध्यान देना होगा, हमने अगर जनता में पनपे रोष की अनदेखी की तो हमारी जो संवैधानिक व्यवस्था है, उसे उखाड़ने के लिए कई अन्नाजी सामने आ सकते हैं। सरकार ने भी अन्ना जी के जनलोकपाल के मुकाबले ढीला-ढाला लोकपाल विधेयक लाकर भ्रष्टाचार को बगल देने की कोशिश की सरकार अगर भ्रष्टाचार के विरोध में लड़ने का मुद्दा रखती है तो जनलोकपाल विधेयक को सदन में क्यों नहीं लाया गया। अब तो सरकार इसमें किए गए उपबंधों के तहत प्रधानमंत्री को शामिल करने समेत सभी बातें सुनने के लिए तैयार है। क्या देश की जनता की बातें सुनने के लिए आंदोलन ही पर्याप्त रह गया है। क्या सरकार संवेदना विहीन हो गई है। अगर यह स्थिति बनी रही तो सरकार को सत्ता में बने रहने का भी कोई अधिकार नहीं है। महाराष्ट्र में घटित आदर्श घोटाले में कैंग ने अपनी रिपोर्ट में सरकार की असफलता को दर्शाया है। सैनिकों की विधवा, उनके लड़के-लड़कियों के लिए छात्रावास और कारगिल शहीदों के परिवारों के नाम से सरकार से भूमि का आवंटन कर सीआरजेड तथा अन्य नियमों को तोड़-मरोड़ कर बड़े लोगों, नौकरशाहों को यहां पर प्लैट आवंटित किए गए, फिर भी यह मामला कानूनी पंच में फंसाकर लटकाया जा रहा है। अगर इसमें भ्रष्टाचार हुआ है, तो दोषियों पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं, आज तक बड़े भ्रष्टाचारी के अपराधियों पर दंडनीय कार्रवाई नहीं की गई। यूनिवर्सल काबाइंड मामले के अपराधी एंडरसन को विदेश जाने की छूट किसने दी, बोफोर्स मामले के अपराधी व्वात्सोवी को विदेश किसने जाने दिया। भ्रष्टाचार मामलों में सरकार द्वारा की जा रही लिपापोती को देखते हुए यह सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने में असक्षम है, यह धारणा अब जनता में भी और पकड़ती जा रही है। एक तरफ सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करने की बातें करती है और इस सरकार के कार्यकाल में ही आज तक के सबसे बड़े घोटाले उजागर हुए हैं। इस मायने में यह सरकार आज तक की सबसे बड़ी भ्रष्ट सरकार है। पहले एक नारा हुआ करता था, जब-जब कांग्रेस आती है, साथ में महंगाई लाती है। अब इसमें यह जोड़ना पड़ेगा, जब-जब कांग्रेस आती है बड़े-बड़े भ्रष्टाचार करती है। कांग्रेस पार्टी और सरकार दोनों ही भ्रष्टाचार के हिमायती दिखाई दे रहे हैं, और हम आज जो भ्रष्टाचार पर चर्चा कर रहे हैं उसमें संजिदगी न दिखाकर एक-दूसरे पर प्रहार करने का काम किया जा रहा है। आज के संदर्भ में खड़े भ्रष्टाचार के उजागर मामलों में कार्रवाई करने और प्रशासन को पारदर्शी बनाने के बजाए अगर आरोप का जवाब प्रत्यारोप में दिया गया तो इस चर्चा का क्या औचित्य रह जाएगा। आज सारे देश में भ्रष्टाचार के विरोध में माहौल बन रहा है लेकिन हमने इसका संज्ञान लेकर कार्रवाई नहीं की तो हम सभी संदर्भहीन हो सकते हैं। अगर सरकार को अपनी और सदन की गरिमा का ख्याल है तो उसे तर्क-वितर्क से बाहर निकल कर भ्रष्टाचार के खिलाफ ठोस कार्रवाई करनी पड़ेगी, नहीं तो जनता का फिर वही नारा गूँजेगा कि "अब जनता आती है, सिंहासन खाती करे"। इसी के साथ अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

THE PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Hon. Speaker Madam, I am very happy that at long last, the House had a debate on the issue of corruption. I thank all the Members who participated in this debate.

Madam, that corruption is a major national issue is a matter about which there is unanimity in the country. That we should collectively work to find credible approaches, credible solutions to deal with this scourge is also a matter which unites all sections of thinking public opinion in our country.

Madam, I share that perception; and on behalf of our Government, I would like to assure this august House that in the two and a half years that is left to us, we will do everything in our power to cleanse the system of this country.

Madam, Dr. Murli Manohar Joshi is not here. Yesterday, he made a powerful speech and he turned it into a personal attack on me as if I am the fountain head of corruption and that I have knowingly connived at corruption of some of my

colleagues....(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Hon. Members, please. What is this?

...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Nothing else will go on record.

(*Interruptions*) *â€¦**

DR. MANMOHAN SINGH: Madam, I consider it beneath my dignity to enter into an argument on issues which are before the PAC, issues which are in our courts. In my seven years as Prime Minister even when the Opposition Members have accused me of many crimes, I have never used harsh language in describing the conduct of any Member of this House.

Madam, I would like to assert before this House that I have a public life in the service of this country for nearly 41 years. In these 41 years of my public life, 20 years in Parliament I have tried to serve this country to the best of my ability.

I, as Finance Minister, inherited an economy with a bankrupt treasury, with foreign exchange reserves totally exhausted, with credit worthiness of our country seriously in doubt. We turned around that economy. We have ensured that this economy, the bankrupt economy that we inherited, has become one of the fastest growing economies of the world.

Madam, whatever the Members of the Opposition may say, the fact is that India is respected all over the world. I think that is because of the inherent strength of our economy, of our polity, of our democratic system but at the margin, in these seven years or earlier as Finance Minister, I did make a small contribution in my own way to enhance the prestige of this country, and therefore, while charges are leveled against me, it hurts. But I am not going to convert this forum into a forum for accusation one way or the other. All I can say is that if any wrongdoing has been done by me, I invite the Leader of the Opposition to look at my property which I may have accumulated in the last 41 years, members of my family ...(*Interruptions*)

I would accept the verdict of the Leader of the Opposition if they find that I have used public office to amass wealth for myself or for any member of my family.

Madam, in the course of seven years as Prime Minister, I may have made mistakes. Who is above making mistakes? To err is human but to accuse me of evil intentions, of conniving at corruption is a charge I firmly repudiate.

Madam, this is not an occasion to trade allegations to and fro and I am not going to deal with this matter as the matter is before the court or before the various Committees of Parliament and they will come with their own conclusions. I would, however, like to say that corruption is a multifaceted problem. Therefore, we, as a nation, have to find practical, pragmatic means but effective means to tackle it, and this is not merely the responsibility of the Central Government. The State Governments are responsible for over 50 per cent of the total national spending and the conduct of the State Governments, which is the one way people come in contact with Government, is essentially the responsibility of the States. There is anger in the country. There is anger about the misuse of public offices.

Therefore, both at the Centre and the States, it is our obligation to clean up the system of governance to reform and to ensure that we leave behind for our children and grand children a system of public administration which is capable of meeting the challenges of the 21st century. I commit our Government to doing precisely that. In my address to the nation from the ramparts of the Red Fort, I listed a number of areas where in the next couple of months I would like our Government to take initiative and I stand committed to whatever I promised from the ramparts of the Red Fort.

Madam, corruption sources are numerous. Until the early 90s, the biggest single source of corruption was the licensing system, the industrial licensing system, the import controls and the foreign exchange controls. The liberalisation that we brought about has ended that part of the corruption story.

Another major part of corruption was the rates of taxation which were so exorbitant that people were tempted to enter into corrupt practices to reduce their tax liabilities. We have, I venture to suggest, ourselves and the successor Governments worked hard to simplify to streamline the taxation system and on balance there is less scope for corruption as far as taxation matters are concerned. Even though I recognise that a residual element is still there and we have to work together through various mechanisms, including goods and services tax which is now in the public domain and, which is, I believe, an obligation which our country must fulfil if it wants to move forward. But, there are many other areas where corruption still persists. We have to tackle this problem from various angles.

There are Central Government programmes administered by the State Governments but there are leakages. Therefore, we must find ways and means of reforming the system of public administration so that these leakages can be plugged. Malfunctioning of public distribution has been widely commented upon. We must, therefore, devise new methodologies to ensure that the Public Distribution System will be free of malpractices. This is an obligation which we can discharge only in full collaboration with the State Governments and discharge we must. But I would like this House to endorse the reform of the Public Distribution System, where the ordinary people come in contact with the Government machinery or meeting the basic needs of existence of livelihood, is cleaned up.

Madam, yet another source is, where Government contracts are given in a manner which creates suspicion that something is going wrong. Therefore, we need a Public Procurement Act, as some other countries have, to streamline our contracting mechanisms in a manner in which there will be less scope for corruption in future.

Madam, in certain areas, greater competition itself will reduce the scope for corruption. But, we know that there are areas of infrastructure where competition can at best be only limited.

There is scope for regulation. We have, in the last couple of years, put in place regulatory mechanisms, but the functioning of these regulatory mechanisms, especially with regard to the management of the infrastructure, is something which requires attention. That is yet another area where we must find ways and means to streamline the regulatory system, so that there is less scope for corruption.

I could go on. But I do not want to repeat what I said from the ramparts of the Red Fort. The House has my assurance that we will work in full public glare to fulfil what we have promised. I have set up a group under Shri Pranab Mukherjee to look at the scope for reducing the amount of discretion that ministers have at the Centre. This group has made some important suggestions. They will be considered by the Cabinet and we will put in place a mechanism to reduce the scope for misuse of discretionary power or to eliminate discretionary power wherever it can be done without detriment to public interest or achievement of public good.

Madam, it is in the context of corruption that the last few weeks have seen momentous developments. Shri Anna Hazare has gone on fast. His plea is that we should adopt the Jan Lokpal Bill that has been drafted by them. The background of this whole exercise is well known to this august House. We had sittings together with the five representatives of Shri Anna Hazare, including himself, who met with our five representatives and a large measure of agreement was reached with regard to the shape of the Lokpal Bill that we should have. On certain matters there was disagreement and that disagreement could not be resolved and therefore we referred that matter for consideration at the All Parties meeting and the consensus was that the Government should come with its own version of the Bill and various Parties would then reflect on what to do with that Bill. We discharged that obligation. We submitted that Bill to Parliament. It has now been referred to the Standing Committee.

This Standing Committee can consider all options and we can find ways and means of ensuring that the Bill that has been prepared by Shri Anna Hazare is given due consideration by this Committee. Also, along with this, there are other ideas. There is Dr. Jayaprakash Narayan's group which produced a Bill; there are ideas which have been mentioned in a paper by Shrimati Aruna Roy. All these matters can be discussed, debated and a consensus can be built up in the Standing Committee. We are open to all suggestions. We will work with all sections of this House to have a Lokpal, who is strong, who is effective and about which there is a national consensus.

We have produced a Bill which reflects the thinking of our Government. But we are open to persuasion and we have an open mind and when we discuss this Bill, whether in Parliament or in the Standing Committee, we will work with a single minded devotion to ensure that we leave behind for posterity a Lokpal Bill which does credit to our concerns for meeting the challenge of corruption.

Madam, yesterday there was a very good meeting of all political parties. All political parties agreed that we should request Shri Anna Hazare to give up his fast and that we should find ways and means to ensure that ideas reflected in the Jan Lokpal Bill are given adequate consideration in parliamentary processes and that we should come forward with a strong, effective Bill which has the broad support of the country as a whole. I commit our Government to working with all sections of the House to realise this dream. Therefore, I urge all Members of the House to join me in making an appeal to Shri Anna Hazare that he has made his point. It has been registered with us. I respect his idealism. I respect him as an individual. He has become the embodiment of our people's disgust and concern about tackling corruption. I applaud him, I salute him. His life is much too precious and therefore, I would urge Shri Anna Hazare to end his fast.

We will find effective ways and means of discussing the Jan Lokpal Bill along with the Government version of the Bill

along with Shrimati Aruna Roy's Bill, along with the ideas in the paper that Dr. Jayaprakash Narayan has submitted. All ideas should be discussed, debated so that we have a Bill which is the best possible Bill, which will help us to deal with the problem of corruption.

Madam, it has been mentioned to me that Shri Anna Hazare and his colleagues are very keen that their Bill should be discussed in the Parliament. I have not thought over this matter in great depth, but a thought comes to me that perhaps we could have a debate in this House on all the Bills that are in the public domain and have a discussion on what are the weak points of various Bills and what are the strong points of various Bills and at the end of that debate, send the whole record for consideration of the Standing Committee of the Parliament. I have a feeling that this will meet the point that Shri Anna Hazare and his colleagues have been making that Parliament must have a chance to give its views on their Bill before sending it to the Standing Committee and therefore, I submit to this august House that this is one via media which will respect the parliamentary supremacy and, at the same time, enable Parliament to take on board ideas contained in the Lokpal Bill drafted by Shri Anna Hazare and his colleagues.

Madam, I conclude by appealing to all sections of the House to join in appeal that I have made to Shri Anna Hazare that his life is much too precious.

We would like him to live a long life and a happy life in the service of our people.

He has registered his point. Therefore, we respectfully request him to end his fast. I think that if we do it, then this would be a befitting finale to this very constructive debate on corruption and in tackling it that has taken place in this House since yesterday.

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): अध्यक्ष महोदया, प्रधानमंत्री जी ने अन्ना हजारे जी से अनशन त्यागने की जो अपील की है, मुझे लगता है कि यह अपील सारे सदन की अपील बन जाए तो कहीं ज्यादा अच्छा होगा। मैं विपक्ष की तरफ से स्वयं को संबद्ध करते हुए यह अपील करना चाहूंगी कि श्री अन्ना हजारे अपना अनशन त्याग दें। उनकी प्रभावी और सशक्त लोकपाल बिल लाने की जो मांग है, मैं यहां से कहना चाहती हूँ कि देश एक प्रभावी और सशक्त लोकपाल लाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम सब यहां जो बैठे हुए हैं, एक बहुत प्रभावी लोकपाल बिल लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और हम ऐसा बिल लाएंगे। हम इस सदन से उन्हें आश्वासन देते हैं कि हमें कितना भी संशोधन करना पड़े, हम इस सदन से एक प्रभावी और सशक्त लोकपाल बिल निकालकर लाएंगे। यह सदन उनसे अपील करता है कि आपका जीवन अमूल्य है, इसलिए आप अपना अनशन त्याग दें। यह पूरे सदन की तरफ से अपील अन्ना हजारे जी को चली जाए। इसके लिए मैं खड़ी हुई हूँ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : माननीय सदस्यगण, मेरे विचार से सभी इस बात से सहमत हैं और सभी अपने को इससे संबद्ध करना चाहेंगे। अभी प्रधानमंत्री जी ने जो अपील की और नेता प्रतिपक्ष की तरफ से जो अपील आयी मैं भी चाहूंगी कि पूरे सदन की तरफ से यह एक आवाज़ अन्ना हजारे जी के पास जाए कि वह हम सब की अपील पर अपना अनशन अब समाप्त करें। उनका जीवन बहुमूल्य है और उन्होंने जिस प्रकार से भ्रष्टाचार के मुद्दे को उठाया, उस पर हम लोगों ने गहन विचार-विमर्श किया है, आगे भी इस पर करेंगे और एक बहुत ही प्रभावी कठम भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए उठाएंगे।

ॐ! (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : श्री दारा सिंह चौहान एवं श्री शैलेन्द्र कुमार इस विषय से अपने को संबद्ध करते हैं।